प्रातः क्लास 21/11/68 ओमशांति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओमशांति। रूहानी बाप रूहानी बच्चों को समझाते हैं। पहली-2 बात समझाते हैं–हे रूहानी बच्चे! रूहानी बाप को याद करो। वह होते हैं जिस्मानी बच्चे और जिस्मानी बाप। तुमको अभी मिला है रूहानी बाप। रूहों को कहते हैं–हे रूहानी बच्चे! बाप को याद करो तो तुम पतित से पावन बन जावेंगे। इस याद की यात्रा अथवा योग अग्नि से पाप भस्म होंगे। और कोई रास्ता पापात्मा से पुण्यात्मा बनने का है नहीं। बाप ने समझाया है सभी पापात्माएँ हैं। साधु-संत-महात्मा, जो भी इस सृष्टि पर हैं, सभी पतित हैं। यह है ही पतित सृष्टि। पावन सृष्टि में देवी-देवताएँ रहते हैं। पतित सृष्टि में पतित मनुष्य रहते हैं। पुरानी सृष्टि को पतित दुनिया, कलियुग कहा जाता है। नई सृष्टि को पावन दुनिया, सतयुग कहा जाता है। अभी कलियुग पुरानी दुनिया है। सतयुग को स्वर्ग, कलियुग को नर्क कहा जाता है। इस समय सारी दुनिया रौरव नर्कवासी है। वैश्यालय में रहते हैं। सतयुग को शिवालय कहा जाता है। अभी सभी रौरव नर्कवासी हैं। मनुष्यों को समझ में नहीं आता है; क्योंकि पत्थर बुद्धि हैं। सतयुग में देवताओं को पारस बुद्धि कहा जाता है। यह ल॰ना॰ पारस बुद्धि हैं। शिवालय के निवासी हैं। फिर यही देवताएँ 84 जन्मों के अंत में विषियस बन जाते हैं। अभी सभी वैश्यालय के निवासी हैं। इन्हों को कब कोई विषियस मनुष्य हाथ लगा न सके। विकारी मनुष्य को अछूत, मलेच्छ कहा जाता है। इस समय सारी दुनिया अछूत, मेहतर है; क्योंकि विख पीते-पिलाते हैं। यह देवताएँ तो सम्पूर्ण निर्विकारी हैं ना; परंतु पत्थर बुद्धि होने कारण यह कोई भी समझते नहीं हैं। भारत है बेसमझ पतित। यह ल॰ना॰ हैं समझदार पावन। कितना फर्क है! पतित होते हैं रात में। पावन होते हैं दिन में। रात भक्तिमार्ग को कहा जाता है। अनेक गुरुओं पास मनुष्य धक्का खाते रहते हैं। जन्म-जन्मांतर तीर्थ यात्रा पर धक्के खाते हैं। सतयुग में तीर्थ यात्रा, शास्त्र आदि होते नहीं; क्योंकि सद्गति में हैं। इस समय सभी की दुर्गति है। एक भी सद्गति वाला यहाँ हो न सके। सद्गति में फिर एक भी दुर्गति वाला नहीं। सद्गति वाले पवित्र होते हैं। उनको अपवित्र कोई छू न सके। ल॰ना॰ के मंदिर में बाउंडरी लगी रहती है, कोई छू न सके; परंतु अपन को मूत पलिति समझते नहीं हैं। सारी दुनिया में मूत पलिति को बाप आकर स्वच्छ बनाते हैं; परंतु मलेच्छों को यह भी पता नहीं है हम मलेच्छ, पत्थर बुद्धि हैं। अभी बाप बैठ समझाते हैं तुम मूत पलिति हो। अभी फिर पावन बनना है। पहले-2 तो यह समझाना चाहिए, यह बाबा है। यह कोई विद्वान, आचार्य, पंडित आदि नहीं हैं। यह बाप भी है, टीचर भी है; क्योंकि पढ़ाते हैं। फिर सभी को सद्गति में ले जाते हैं तो सद्गुरु भी है। सुप्रीम फादर, सुप्रीम टीचर, सुप्रीम प्रीसेप्टर भी है। बाक़ी तो वह विद्वान, आचार्य, पंडित आदि सभी पतित हैं। विकार से पैदा होते हैं। भल साधु, महात्मा हो; परंतु देवताओं को हाथ नहीं लगा सकते; क्योंकि मलेच्छ हैं। इसलिए बाउंडरी लगा देते हैं, कोई छू न सके। आधा कल्प दुनिया स्वच्छ रहती है। आधा कल्प पतित रहती है। इसलिए सभी कहते हैं–पतित-पावन आओ, आकर हमको पावन बनाओ। आधा कल्प है पवित्र दुनिया सूर्यवंशी-चन्द्रवंशी। फिर वही आधा कल्प बाद वाममार्ग में जाते हैं। देवताएँ भी विकार में जाते हैं। सदैव देवता नहीं रहते। देवताएँ थे ज़रूर, जिनका मंदिर है। वह कितने स्वच्छ थे। कोई छू न सके। आजकल पैसा दो तो छूने भी देंगे। करपशन, रिश्वत सभी से जास्ती तो इन साधु-संतों में है। यह जो अपन को ईश्वर कह अपनी पूजा कराते हैं उन्हों को ही हिरण्यकश्यिप कहा जाता है। शिवोअहम् कहते रहते हैं। माइयाँ जाकर उन पर दूध चढ़ाती हैं, फूल चढ़ाती हैं। शिवोअहम् भी कहते रहते फिर कह देते ईश्वर सर्वव्यापी है। तो यह बाप बैठ समझाते हैं कोई भी मनुष्य मात्र को ऐसे कह नहीं सकते कि बाप भी है, टीचर भी है, गुरु भी है। यह सभी बातें एक बाप ही आकर समझाते हैं। बाप कहते हैं मैं ही सर्व की सद्गति दाता हूँ। मुझे कोई भी नहीं जानते। विद्वानों को इतना भी पता नहीं है कि गीता किसने सुनाई। राजयोग किसने सिखाया। बाप तो एक ही बार आकर पढ़ाते हैं। ज्ञान सागर वह एक बाप ही है। उनको कहते हैं ज्ञानेश्वर। ईश्वर में ही सारा ज्ञान है। बाकी सभी मनुष्य मात्र में है अज्ञान। भक्ति को अज्ञान कहा जाता है,

जिस कारण भारत का यह हाल हुआ है। कितनी दुर्गति हो गई है। इस समय भारत दुर्गति, आयरन एज्ड में है। गोल्डन एज में थे फिर 84 जन्म लेते-2 आयरन एज्ड बन पड़े हैं। तो ज्ञान का सागर एक ही बाप है। कोई मनुष्य को ज्ञान का सागर नहीं कहा जाता। देवताओं को भी नहीं कहा जाता। देवताओं में ज्ञान होता ही नहीं। सिर्फ तुम ब्राह्मण, जो कि प्रजापिता ब्रह्मा के मुखवंशावली हो, उनको यह ज्ञान है। ज्ञान सागर बाप द्वारा तुमको अभी ज्ञान मिला है। बाप आते ही हैं पुरुषोत्तम संगमयुग पर। यही कल्याणकारी संगमयुग है, जबकि पतित-पावन बाप आकर पावन बनाते हैं। वह लोग फिर कह देते पतित-पावनी गंगा नदी है। अभी गंगा जी का पानी तो बहुत पीते हैं, पावन कहाँ बनते? पानी तो जहाँ-तहाँ है। कुरुक्षेत्र नासिका आदि में नदी भी नहीं है जहाँ खड़ा हुआ पानी देखेंगे, समझेंगे यह है पतित दुनिया। गंदी मिट्टी भी उठाकर मलते हैं। बाप कहते हैं यह सभी करते और ही पतित बनते हैं। भक्ति में कितने व्यभिचारी बन पड़े हैं। जहाँ-तहाँ माथा टेकते रहते हैं। शिवबाबा को तो शरीर है नहीं। शिवबाबा कोई को माथा टेकने नहीं देते। वह तो नॉलेज बैठ समझाते हैं। कहते हैं अपन को आत्मा समझो। जो अपन को देह समझते हैं वह मेहतर हैं। देह अभिमानी मनुष्यों को अछूत, देही अभिमानी देवताओं को स्वच्छ कहा जाता है। यह ल॰ना॰ कितने स्वच्छ हैं! सभी इनके आगे माथा झुकाते हैं। राजाएँ-महाराजाएँ भी। वह भी महाराजा। इनको कहेंगे महाराजा श्री ना॰, महारानी श्री ल॰। उनको कहेंगे महाराजा ऑफ बिकानेर। महाराजाएँ और राजाएँ दो हैं। सतयुग में ल॰ना॰ को महाराजा-महारानी कहा जाता है। राम को राजा कहा जाता। यह महाराजा-महारानी दोनों पावन, वह महाराजा-महारानी दोनों पतित हैं। तो बाप समझाते हैं मैं तुमको राजाओं का राजा अर्थात् पतित राजाओं से भी ऊँच पावन महाराजा-महारानी बनाता हूँ। राम को महाराजा नहीं कहेंगे। राम राजा कहते हैं। इनको राजा नारायण नहीं, महाराजा राजा नारायण कहेंगे। सिंगल ताज वाले पतित, डबल सिरताज देवताओं को माथा टेकते हैं; क्योंकि विकार में जाने से पतित बनते हैं। सर्प-सर्पनी बन पड़ते हैं। शंकराचार्य कहते हैं माताएँ नर्क का द्वार हैं। यह शिवाचार्य कहते हैं माताएँ तो स्वर्ग का द्वार हैं, इसलिए वंदेमात्रम् गाया हुआ है; परंतु यह कोई भी मनुष्य नहीं समझते। वेद, शास्त्र, गीता आदि पढ़ते हैं; परंतु मैंढकों मिसल पढ़ते हैं। अर्थ कुछ भी नहीं। उनको भी यह पता नहीं लगता गीता का ज्ञान किसने दिया। क्रिश्चियन लोग फिर भी जानते हैं क्राइस्ट ने यह धर्म स्थापन किया। बुद्ध ने फलाने टाइम बौद्ध धर्म की स्थापना की। इब्राहिम कब आया यह भी उन्हों को मालूम है। भारत से फिर भी वह सेंसीबुल हैं। भारतवासी तो बिल्कुल ही नॉनसेंस हैं। उनको यह पता नहीं है भारत का हिन्दू धर्म तो है नहीं। आदि सनातन देवी-देवता धर्म ही स्थापन हुई है। वह किसने स्थापन किया यह मनुष्यों को पता नहीं है। भारतवासियों को ही पत्थरबुद्धि मूत पलिति कहा जाता है। ऊँच ते ऊँच, फिर नीच ते नीचे भी यह बने हैं। ऊँच ते ऊँच निशानी खड़ी है। इन्हों के आगे गाते भी हैं सर्वगुण सम्पन्न... . हम नीच, पापी हैं। हम अछूत मेहतर हैं। आप स्वच्छ हो। स्वच्छ को अछूत हाथ नहीं लगा सकते हैं। बाप तुमको ऐसा ऊँच बनाते हैं। इसलिए कहते हैं मामेकं याद करो। तो तुम पावन बन जावेंगे। बाप बैठ बच्चों को सृष्टिचक्र का राज़ समझाते हैं। हरेक आत्मा को इस ड्रामा में अनादि अविनाशी पार्ट मिला हुआ है। तो आत्मा भी अविनाशी भी(ही) है। उनका पार्ट अविनाशी है। इसलिए समझाया जाता है वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी कैसे रिपीट होती रहती है। सतयुग-त्रेता... फिर सतयुग में जो देवी-देवताएँ थे वही होंगे। फिर वही चन्द्रवंशी होंगे। 500 करोड़ आत्माएँ हैं। सभी एक्टर्स हैं। हरेक को अविनाशी पार्ट मिला हुआ है। इसको कहा जाता है बना बनाया अनादि अविनाशी वर्ल्ड ड्रामा। इस समय है रावण राज्य। रावण सम्प्रदाय हैं। सतयुग में भारत दैवी सम्प्रदाय था। अभी आसुरी सम्प्रदाय बना है; क्योंकि मूत पलिति हैं। विख खाते रहते हैं। इनको कहा ही जाता है आसुरी सम्प्रदाय। भल बड़े-2 विद्वान-आचार्य जो भी हैं, जो अपन को श्री-श्री 108 जगतगुरु कहलाते हैं, वह नम्बरवन शैतान हैं। जगत का गुरु तो एक ही होता है। वही सुप्रीम बाप है, सुप्रीम टीचर है। सुप्रीम गुरु भी है। सबकी सद्गति करने वाला है। बाकी वह गुरु लोग

तो दुनिया को डुबोते हैं। मनुष्यों को कितना धोखा देते हैं। अभी बाप कहते हैं ऐसे गुरुओं को छोड़ो, इन्होंने तुम्हारी दुर्गति की है। शास्त्रों का ज्ञान है ही भक्ति। इन शास्त्र आदि पढ़ने से कोई भी मेरे को प्राप्त नहीं होते। गीता में बाप ने कहा है जो भी साधु-संत आदि हैं इन सभी का मैं उद्धार करता हूँ। अभी जिनका बाप को उद्धार करना है वह अपन को गुरु कैसे कहला सकते? वह गुरु सद्गति कैसे कर सकते? वह तो जो कुछ सुनाते हैं सभी झूठ। भगवान तो एक ही है जो पुनर्जन्म में नहीं आते। वह एक ही बेहद का बाप है, जिसके तुम बच्चे हो। सर्वव्यापी कहने से तो जानवर हुड हो जाते। इसको अज्ञान कहा जाता। इस अज्ञान के कारण भारत की कितनी दुर्गति हो गई है। यह भी ड्रामा का खेल है। सभी तो स्वर्ग में नहीं आते। आधा कल्प है ही देवी-देवताओं का राज्य। फिर पिछाड़ी में आधा कल्प है वैश्यवंशी-शूद्रवंशी। अभी है पुरुषोत्तम संगमयुग ब्राह्मणों का। ब्राह्मणों को ही बाप पढ़ाकर मनुष्य से देवता बनाते हैं। पहला-2 आदि सनातन देवी-देवता धर्म अभी तब(तक) भी वह चला आता है; परंतु विकारी होने कारण अपन को देवी-देवता कह न सके। हिन्दू हिन्दुआनी कहलाते हैं। यह हैं पतित। देवताएँ हैं पावन। कितना फर्क पड़ जाता है! अभी यहाँ तुम आये ही हो बेहद के बाप से वर्सा लेने, जो बाप भी है, टीचर भी है, गुरु भी है। कोई भी मनुष्य को ऐसे कोई बाप, टीचर, गुरु कह न सके। यह बेहद का बाप ज्ञान का सागर है। ज्ञान भी सुनाते हैं, फिर साथ ले भी जावेंगे। यह ऐटॉमिक बॉम्ब्स आदि विनाश के लिए ही बने हुये हैं। विनाश के पहले याद की यात्रा से पावन बनना है। दुनिया में तो कोई भी बाप को जानते नहीं, तो याद कैसे करें? बाप को जानते ही नहीं तो फिर ढूँढ़ेंगे कैसे? नॉनसेंस ठहरे ना। ईश्वर को जानते ही नहीं। कहते हैं ईश्वर को जन्म-जन्मांतर ढूँढ़ा है। जबकि मालूम ही नहीं तो ढूँढ़ेंगे कैसे? सर्वव्यापी है, कुत्ते-बिल्ले-ठिक्कर में फिर ढूँढ़ेंगे कहाँ? बाप कहते हैं तुम कितने बेवकूफ तुच्छ बुद्धि हो। तुमको मालूम ही नहीं ईश्वर कौन है, तो मूर्ख बुद्धि हुये ना। सर्वव्यापी है फिर मिलेगा कहाँ? बाप कहते हैं तुम कहाँ ढूँढ़ेंगे? वह समझते हैं शास्त्रों से भगवान मिलता है। बाप कहते हैं मैं इन सभी से मिलता नहीं हूँ। यह भक्ति अज्ञान मार्ग है। गायन भी है विनाश काले शिवबाबा से विपरीत बुद्धि, जो कह देते हैं कुत्ते-बिल्ले, ठिक्कर-भित्तर में है। तुम बच्चों की है विनाश काले प्रीत बुद्धि; क्योंकि तुम बाप को जानते हो। सृष्टि के आदि-मध्य-अंत को भी जानते हो। बाप आकर अपने साथ प्रीत जोड़ते हैं। शिवबाबा इस रथ में आकर कहते हैं—मुझे याद करो तो तुम पावन बन जावेंगे। यह ज्ञान एक बाप ही दे सकते हैं। वही ज्ञान का सागर है, जो तुमको देते हैं। ऐसे नहीं कि गंगा स्नान करने से कोई पावन बनेंगे। एक तरफ कहते भी हैं—हे पतित-पावन आओ, दूसरे तरफ गंगा को पतित-पावनी कह देते हैं। अभी पतित-पावन है कौन? अभी तुम बच्चे समझदार बने हो। पानी कैसे पतित-पावनी बनेगा? यह महान मूर्खता है। कितने वहाँ जाकर निवास करते हैं। समझते हैं हम पावन बन जावेंगे। बाप कहते हैं यह तो महान पतित बनते हैं। कितने मूर्ख बन पड़े हैं। रावण को गधे का सिर देते हैं ना। मनुष्य देवता से बदल टट्टू गधे मिसल बने जाते हैं। गधे बेवकूफ होते हैं। घड़ी-2 मिट्टी में लेटकर मैले बन पड़ते हैं। बाप भी कहते हैं खबरदार रहना, टट्टू मिसल फिर मैला नहीं बनना। मैं तुम्हारी आत्मा को पावन बनाने आता हूँ। ऐसा न हो विकारी बन सारा श्रृंगार ही गंवा दो। फिर ऐसा देवता बन सकेंगे नहीं, बहुत सज़ा खावेंगे। अभी कयामत का समय है ना। इनको काँटों का जंगल कहा जाता है। सबसे बड़ा काँटा है विकार का। यह माक(काम) विकार ही आदि-मध्य-अंत दुःख देते हैं। भगवानुवाच काम महाशत्रु है। काम पर जीत पाने से जगतजीत बनेंगे। अभी विनाश सामने खड़ा है। विनाश से पहले पवित्र बनना है। प्रतिज्ञा करनी है, हम कब विकार में नहीं जावेंगे। फिर वहाँ तो निर्विकारी ही रहते हैं। प्रतिज्ञा की पालना जो नहीं करते हैं वह बहुत कड़ी सज़ा खाते हैं। सभा बैठती है। तुम शिव पर ब(लि) चढ़ते हो ज्ञान से। वह है अज्ञान। जीवघात करते हैं। समझते हैं हम शिव पर ब(लि) चढ़ते हैं तो हम स्वर्ग में चले जावेंगे; परंतु स्वर्ग में कोई जा नहीं सकते। स्वर्ग में जाने की युक्ति तो बाप ही बतलाते हैं। मनुष्य मनुष्य को मुक्ति जीवनमुक्ति दे न सके। अच्छा, बच्चों को गुडमॉर्निंग।